

**अग्निपक्व** वि. (तत्.) आग में पका हुआ या पकाया हुआ।

**अग्निपरीक्षा** स्त्री. (तत्.) 1. आग द्वारा परीक्षा या जाँच, किसी व्यक्ति को जलती हुई आग में बिठा कर या उस पर चला कर या उसकी हथेली पर आग रखकर उस के दोषी या निर्दोष होने की जाँच 2. कठिन या दुस्साध्य परीक्षा 3. आग में तपा कर सोने, चांदी आदि धातुओं की शुद्धता की परख 4. नाड़ी-परीक्षा।

**अग्निपर्वत** पुं. (तत्.) ज्वालामुखी पर्वत।

**अग्निपुराण** पुं. (तत्.) अठारह पुराणों में से एक जिसे अग्नि देवता ने वशिष्ठ जी को सुनाया था।

**अग्निपूजक** पुं. (तत्.) अग्नि की पूजा करने वाला (पारसी धर्म के अनुयायी अग्नि की पूजा करते हैं, अतः उन्हें भी अग्निपूजक कहा जाता है।)

**अग्निप्रतिष्ठा** स्त्री. (तत्.) धार्मिक अनुष्ठानों में अग्निवेदी या अग्निकुंड में अग्नि की स्थापना।

**अग्निप्रवेश** पुं. (तत्.) 1. अग्नि में प्रवेश करना 2. पति की चिता में प्रवेश करके सती होने की क्रिया।

**अग्निप्रस्तर** पुं. (तत्.) आग उत्पन्न करने का पत्थर (पत्थर को आपस में रगड़कर आग पैदा की जाती है।)

**अग्निबाण** पुं. (तत्.) बाण जिसे चलाने से उसमें से आग निकलती थी, जिससे शत्रु उसमें भस्म हो जाता था, अग्न्यस्त्र, आधुनिक अर्थ में प्रक्षेपास्त्र।

**अग्निबीमा** पुं. (तत्. + फारसी) बाणि. आग लगने या बिजली गिरने से नष्ट हुई संपत्ति के लिए क्षतिपूर्ति का बीमा।

**अग्निभ** वि. (तत्.) अग्नि की आभा के समान चमकने वाला 2. सोना 3. कृतिका नामक नक्षत्र

**अग्निभीति** स्त्री. (तत्.) एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक विकार या रोग जिसमें रोगी आग देखकर अकारण भयभीत हो जाता है।

**अग्निभू.** वि. (तत्.) 1. अग्नि से उत्पन्न होने वाला 2. कार्तिकेय।

**अग्निमंथ** पुं. (तत्.) 1. अग्नि उत्पन्न करने की क्रिया 2. 'अरणी' नामक वृक्ष की लकड़ी जिसके टुकड़ों को रगड़कर आग पैदा की जाती है।

**अग्निमंथन** पुं. (तत्.) दे. अग्निमंथ।

**अग्निमणि** पुं. (तत्.) अग्नि जैसी चमक वाली मणि, सूर्यकांत मणि।

**अग्निमांद्य** पुं. (तत्.) भूख का अभाव, पाचन शक्ति कम हो जाना, एक प्रकार का अपच का रोग जिसे 'अजीर्ण रोग' कहते हैं।

**अग्निमान्** पुं. (तत्.) विधिपूर्वक अग्नि को रखनेवाला द्विज, अग्निहोत्री, वि. (तत्.) अच्छी पाचन शक्तिवाला।

**अग्निमुख** पुं. (तत्.) 1. ब्राह्मण 2. देवता 3. प्रेत 4. अग्निहोत्री 5. अग्निवर्धक चूर्ण।

**अग्निरजा** पुं. (तत्.) 1. बीर बहूटी 2. सोना।

**अग्निरेता** पुं. (तत्.) 1. आग का तेज या बल 2. सोना।

**अग्निवधू** स्त्री. (तत्.) अग्नि की पत्नी टि. अग्नि को वैदिक देवता के रूप में मान्यता मिली हुई है, उनकी पत्नी 'स्वाहा' के नाम से जानी जाती है, अतः यज्ञ में आहुति देकर 'स्वाहा' कहकर उन्हें प्रसन्न किया जाता है।

**अग्निवर्ण** वि. (तत्.) 1. अग्नि के समान रंग वाला 2. प्रसिद्ध 'रघुवंश' महाकाव्य में अग्निवर्ण नाम का एक राजा हुआ जिसके कुकृत्य के कारण वंश का अंत हो गया।

**अग्निवर्धक** वि. (तत्.) 1. अग्नि (जठराग्नि) या पेट की भूख बढ़ाने वाला तत्व या पदार्थ 2. भूख बढ़ाने वाली औषधि।

**अग्निवर्धन** वि. (तत्.) पाचन शक्ति या भूख की वृद्धि।

**अग्निवर्षा** स्त्री. (तत्.) 1. युद्ध में अग्निबाणों से आग की वर्षा 2. भयंकर धूप (या गर्मी) जो आग बरसाने-सी लगे।

**अग्निवाह** पुं. (तत्.) अग्नि का वाहन, धुआँ।